❀ ॐ ❀

सद्गुरु का उपदेश

ब्रह्मीभूत परमहंस श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज

के

सदुपदेश

संग्रहकर्ता व प्रकाशकः—

स्वा० रामानन्द सरस्वती, श्रीभगवद्भक्ति आश्रम, जींद

बहुत मनुष्यों को इन उपदेशों का लाभ हो सके इस पवित्र भावना से प्रेरित होकर श्रद्धा, भक्ति-मती एक देवी ने अपने गुप्त दान से एक हजार पुस्तकें छपवाईं। उनको हमारा अनेक बार धन्यवाद है।

सं० २०१६। मूल्य सदुपयोग।

मुद्रक—भूमानन्द ब्रह्मचारी, "भक्ति प्रेस" गोकल बाजार, रेवाड़ी

❀ ओ३म् ❀

-:-:- नम्र निवेदन -:-:-

इस पुस्तक का निर्माण श्री पूज्य महाराज जी के मुखार-विन्द द्वारा हुआ है। इसमें उनके उन शब्दों का संग्रह हैं जो कभी कभी स्वाभाविक अपनी मौज में गाया करते थे और कुछ उनका सारगर्भित उपदेश है एवं सदाचार नाम से उनका उपदेश जो श्री महाराज जी ने अपने शरीर के अन्त समय में जब कि वे शिमला के जाखू शिखर पर धौलपुर महाराज की कोठी में विराजमान् थे लिखाया था।

शब्द और सदाचार इन दोनों में श्री पूज्य महाराज जी ने अपने सदुपदेश का दिग्दर्शन कराया है जो वर्तमान युग में मनुष्यों को अत्यावश्यक है।

यों तो श्री महाराज जी प्राणीमात्र का हित चाहते थे परन्तु मनुष्य, पशु और वृक्षों की तरफ उनका विशेष ध्यान था। इनमें भी स्त्री, गौ और दलितवर्ग का उत्थान कराना चाहते थे। उन्होने बताया था कि पशु और वृक्षों के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। अतः मनुष्य जीवनोपयोगी पशु और वृक्षों की उन्नति होनी चाहिये।

इस समय मनुष्य, पशु और वृक्ष ये तीनों ही अवनति-गिरावट की तरफ जा रहे हैं। अब इन की उन्नति कैसे हो, इस के लिये श्री पूज्य महाराज जी ने कुछ उपाय बतलाये हैं।

मनुष्यों की उन्नति के लिये आपने बताया है कि दस-दस पांच-पांच ग्रामों के बीच में एक एक आश्रम बनाया जाय और वहीं जंगल में लड़की लड़कों की पाठशाला होनी चाहिये। १५, १६ वर्ष लड़की और १८, २० वर्ष तक लड़कों के आचार की ब्रह्मचर्य की पूरी २ देख भाल के साथ रक्षा की जाय। उन्हें विषय भोगों के अधीन न होना चाहिये, अधिक उपाधि न बढ़ावें और न अधिक सन्तान पैदा करें। आवश्यकतायें जितनी कम हो सकें कम करें। स्त्री-पुरुषों को ऋतुगामी होकर उत्तम सन्तान पैदा करने का दृढ़ संकल्प करना चाहिये। स्त्री को पतिव्रत धर्म और पुरुष को नारीव्रत धर्म पालन करना चाहिये। हरेक काम सब की भलाई के लिये पवित्र भावना से करना चाहिये। सादगी से रहना, सात्विक भोजन करना इत्यादि बहुत सी बातें मनुष्यों के जीवन सुधार के लिए बतलाई हैं। इसी प्रकार पशुओं की नसल सुधार की आवश्यकता है— गोरक्षा के लिए आपने बताया है कि गौओं की अच्छी नसल बनाकर उन्हें दुधार बनाया जाय और उनके चरनेके लिये पर्याप्त चरागाह (गोचर-भूमि) छोड़ी जाये। वृक्ष अच्छे २ लाभदायक, पूज्य, उत्तम नसलके पवित्र वायु और प्रभूत फल देने वाले लगाये जायें।

इन्हीं सब कामों का बीजारोपण करने के लिये श्री महाराजजी ने भगवद्भक्ति आश्रम नाम से आश्रमों का निर्माण कराया था जो रामपुरा रेवाड़ी, जींद, पालम, दादरी, भटिंडा आदि कई नगरों में बने हुये हैं। रामपुरा रेवाड़ी आश्रम में तो श्री पूज्य महाराजजी ने प्रायः इन सभी कामों का श्री गणेश करा दिया था। अच्छी २ किस्म के बहुत बड़ी संख्या में अनेक

वृक्षों से आश्रम हरा भरा हो रहा है तथा अच्छी नसल के लिये एक आदर्श गौशाला बनवाई। शिक्षा के लिये लड़के लड़कियों की पाठशाला खुलवाई, दलितोद्धार के लिये देश में सब से पहले आश्रम में शिक्षा का प्रबन्ध कराया। आश्रम में एक औषधालय खुलवाया जिससे ग्रामों के बीमार दवाई ले जाते हैं। धार्मिक शिक्षा का प्रकाशन कराने के लिये एक भक्ति प्रेस आश्रम में खुलवाया।

स्त्री शिक्षा के लिये एक कन्या पाठशाला खुलवाई, कन्या पाठशाला का काम अच्छी तरह चलता रहे इस विचार से स्वर्गीय धर्मभूषण श्री राव बहादुर राव बलवीरसिंह जी ने अपना एक कृष्णपुर नाम का ग्राम कन्या पाठशाला के नाम करा दिया और अपनी सुपुत्री राजकुमारी श्रीमती सुमित्रा देवी को उसकी संचालिका बना दिया जो इस समय एम. एल. ए. पंजाब विधान सभा की सदस्या हैं और पंजाब कांग्रेस की उप-प्रधान हैं। अब यह कन्या पाठशाला बहुत ऊँचे दर्जे पर काम कर रही है।

स्त्री शिक्षा के लिए आश्रम में एक बेसिक स्कूल खुला हुआ है और युवा स्त्रियों के लिये एक प्रौढ़ शिक्षा का स्कूल खुल गया है। जिसमें बड़ी उमर की देवियां शिक्षा पाती हैं। आश्रम में एक स्टेडियम बनाया जा रहा है जिसका उद्घाटन स्वयं गृह मन्त्री भारत रत्न श्री गोविन्द वल्लभ पन्त जी ने किया है और नेत्र रोगियों के इलाज के लिये एक अस्पताल बनाया गया है जिसका उद्घाटन केन्द्रीय पुनर्वास मन्त्री श्री मेहरचन्दजी खन्ना

साहब ने किया है। आश्रम में सड़क, बिजली और पानी के नल आदि अनेक प्रकार की सुविधायें करने तथा उपरोक्त सब कामो का श्रेय स्वर्गीय धर्मभूषण श्रीमान् राव बहादुर राव बलवीर-सिंह जी के उत्तराधिकारी श्रीमान् राव वीरेन्द्रसिंह जी को है। जो इस समय पंजाब सरकार के मन्त्री हैं। जिस भूमि पर यह परम रमणीय आश्रम बना हुआ है, इसके बनाने के लिये लग-भग १००० बीघा भूमि स्वर्गीय धर्मभूषण श्री राव बहादुर राव बलवीरसिंह जी ने पहले ही श्री पूज्य महाराज जी को समर्पण कर दी थी। उसी भूमि पर ये सब काम हो रहे हैं। इस आश्रम को देखने वाले श्री महामना मालवीय जी जैसे अनेक दर्शकों ने प्राचीन ऋषि महर्षियों के आश्रमों के अनुरूप समझा (बताया) है। ऐसे आश्रमों के द्वारा ही आगे होने वाली सन्तानों को जीवन सुधार की अच्छी शिक्षा मिल सकती है।

॥ ओं शम् ॥

—स्वा० रामानन्द

❀ प्रार्थना ❀

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ओम्= सर्व व्यापक, सबकी रक्षा करने वाले।

भूः= सत्तास्फूर्ति देने वाले सत्य स्वरूप।

भुवः= दुःखों का नाश करने वाले, ज्ञान स्वरूप।

स्वः= सुख स्वरूप।

तत्= अनन्त अपार सब के सारभूत परमात्मा।

सवितुः= सब जगत् के उत्पन्न करने वाले, पालन करने वाले, संहार करने वाले, प्रेरणा करने वाले।

वरेण्यम्= सर्व श्रेष्ठ।

भर्गो= तेजः पुञ्ज ज्योति स्वरूप।

देवस्य= दिव्य ज्ञान और आनन्द के देने वाले, विजय कराने वाले, प्रकाश स्वरूप, सर्व शक्तिमान, दयालु, कृपालु परमात्मा।

धीमहि= हम आपका ध्यान करते हैं।

धियः= बुद्धियों को।

यः= जो।

नः= हमारी।

प्रचोदयात्= प्रेरणा करें। आप हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करें, कि हम आपको प्राप्त हों! हमको पवित्र बुद्धि और अपनी भक्ति प्रदान कीजिये।

ॐ यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे ।
तत्तेजोऽस्माकं बुद्धीः श्रेयस्करेषु नियोजयेत् ॥

हे तेजपुञ्ज ज्योति स्वरूप परमात्मन् ! ज्ञान और आनन्द के देने वाले ! विजय कराने वाले ! प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सबको उत्पन्न करने वाले ! सब का संहार करने वाले ! सब की रक्षा करने वाले ! सब को प्रेरणा करने वाले ! अनन्त, अपार, आनन्द स्वरूप ज्ञान स्वरूप परमात्मन् ! हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हम में प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं, सो ही तुम हो, ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र और धर्मार्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करो हम में तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे। सबको हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम, क्रोध इत्यादि, और बाहर हमारी उन्नति में बाधक विघ्न-कारक शत्रु सब नष्ट हों। जिससे आनन्द पूर्वक हम आपको प्राप्त हों। धन्यवाद पूर्वक हमारी आपको अनन्तवार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो।

॥ ओं शंकरोतु शंकरः ॥

❀ मङ्गलाचरण ❀

ओंकार मंगल सदा, प्रणमों बारम्बार ।
परमानन्द स्वरूप निज, ज्ञान भक्ति दातार॥
ओम् निरञ्जनं दुःख भंजनं, ररंकार ओंकार ।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही, अलखं सर्वाधार ॥

भजन नं० १

ओं निरञ्जन ररंकार प्रभु सोऽहं सत्य नाम करतार ।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार, परमानन्द रूप निरधार॥
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार, तुमरी ज्योति का उजियार ।
मैं मैं मैं पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार॥
राम आत्मा अपरम्पार, शंकर ब्रह्म सर्व का सार॥
ओत प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ।
हरि नारायण अग्नि तार, देव-देव मैं करहुँ पुकार ।
कृष्णानन्ताऽचलऽहं गौड़ हूं फट अल्ला सर्व पसार॥
विनवौं तुम को बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार ।
तद्वन गणपति नयनमझार, होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार॥

❀ भजन नं० २

दोहा-पुरुष, प्रकृति अरु ईश मिल, अकार, उकार मकार ।
सर्व वेद का मूल है, एक शब्द ओंकार॥

हमारे प्रभु ! एक तुम्हीं ओंकार॥ टेक॥
मात,पिता, गुरु, बन्धु-सहोदर, धन, विद्या परिवार॥१॥
मन बल बुद्धि प्राण तुम्हीं हो, नयनों में उजियार॥२॥

❀इस भजनमें ओंकार की व्यापकरूप से उपासना बलताई गई है।

हरि होकर हरे रंग में दीसो, पत्र पुष्प फल डार ॥३॥
धरनी आकाश शशि और तारे, बिजली में चमकार ॥४
ऊपर नीचे पर्वत सागर, सब तुम अपरम्पार ॥५॥
तुम ही सूरज में हो गरजो, बरपो अमृत धार ॥६॥
एक ध्वनि हो तुम से सब की, तुमरा वार न पार ॥७॥
सुन्दर शक्ति विकाश शुद्धता हमको दो दातार ॥८॥
काम, क्रोध, मद, लोभ निवारो, परमानन्द दो प्यार॥९

भजन नं० ३

दोहा– अच्युत अगम अपार प्रभु तद्वन ब्रह्म अनन्त ।
परमहंस अज ईश शिव, सब के आदि और अन्त ॥

भजो रे मन ! शुद्ध सच्चिदानन्द ॥टेक॥
सकल ब्रह्माण्ड पुकारें जिनको, अनन्त अपार अखण्ड ॥१॥
पुष्प कुमार गगन में तारे, वर्णत सूरज चन्द ॥२॥
सभी वस्तु की सुन्दरताई, जितलावे गोविन्द ॥३॥
ओंकार अज ज्योति स्वरूपा, पूर्ण परमानन्द ॥४॥

भजन नं ४

जपो रे मन ! मूल मन्त्र ओंकार ॥ टेक ॥
ओंकार से वेद प्रकट भये विद्या का भण्डार ॥१॥
ओंकार का ध्यान धरे जो, हो जावे भव पार ॥२॥
वेद के आदि अन्त और मध्य में, ऋषि करें उच्चार ॥३॥
चारों वेद पुराण अठारह, सर्व शास्त्र का सार ॥४॥
निरंकार और ज्योति स्वरूपा, आप में आप निहार ॥५॥

❀ भजन नं० ५

दोहा:-एक शब्द गुरुदेव का, जा का अनन्त विचार ॥
पण्डित थाके मुनि जना, वेद न पावें पार ॥

सुनो भाई साधो ! अक्षर पद का विचार ॥टेक॥
नित्य शुद्ध, शिवरूप, निरंजन, निर्विकल्प, निश्चय भव भंजन ।
अजर, अमर, अज, निर्गुण, निर्मल निर्विशेष निराधार ॥१॥
विभु, अनन्त अद्वैत अविनाशी, पुरुषोत्तम, स्वतन्त्र सुखराशी ।
स्वयं प्रकाश असंग अनादि, निष्क्रिय और निराकार ॥२॥
पूर्ण ब्रह्म अनन्त अनूपा, अप्रमेय अव्यक्त अरूपा ।
निर्विकार निरवयव सनातन अगम अखण्ड अपार ॥३॥

* भजन नं० ६

दोहा- ध्वजा फड़के शून्य में बाजे अनहद तूर ।
तकिया है मैदान में पहुँचेगा कोई शूर ॥

गगन मण्डल में जो जन जाकर, सुने बेहद अनहद बानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥
श्याम पुतलिया बदल आंख की रूप रंग देखो सारे ।
सप्त ऋषियों ने सात घाट पर भिन्न-भिन्न आसन मारे ॥
जिसमें थाना सहस्त्र कमल का तीन लोक यहाँ विस्तारे ।
जनिता सविता देव सबन के ब्रह्म रूप सातों धारे ॥
चूँ चूँ चैंकुला झाल समद की घण्टा शंख बजें न्यारे ।
धूम निहार गगन में धँस चल ज्योति जले नौ लख तारे ॥

❀ इस पद में अक्षर-ब्रह्म का स्वरूप बतलाया गया है ।

पांच कमल के बीच कुण्डलिनी सहज सहज ही फुङ्कारे ।
मेरू दण्ड से सीधा होकर, तोड़ दिये नभ के तारे ॥
तीन लोक की रचना यहां पर, भई सुरति यहां दीवानी ॥
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥१॥

दर्शन यहां त्रिलोकपति के पाओ मन में हर्षाओ ।
सूची अग्र छिद्र में होकर बंक नाल में घुस जाओ ॥
तिरछा मार्ग बंक नाल का विन सद्गुरु कुछ नहीं पाओ ।
ऊँचा नीचा ऊँचा होकर त्रय मण्डल पर चढ़ जाओ ॥
प्रत्याहार धारणा धारो सिमिट बीच सुख मन आओ ।
पीपी पपीहा ऊपर बोल्यो कूर्म बन कर छिप जाओ ॥
और मरें सब जग का मरना तुम जीते जी मर जाओ ।
भृङ्गी गुरु का शब्द सुनो तुम चरण गुरु के चित लाओ ॥
तन मन सौंपो अपना उन को हो जाओ सर्वस्व दानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥२॥

यह ब्रह्माण्ड फोड़ अण्डे से त्रिकुटी का मण्डल साजा ।
योजन लक्ष लक्ष का घेरा सरे जीव का सब काजा ॥
हास्य विलास यहां पर अद्भुत, ओं ओं हू हू वाजा ।
रस का उठे सरूर यहां पर अनहद का बादल गाजा ॥
सहस्र भानु की ज्योति जगे यहां मदन देख कर ही लाजा ।
ज्ञान विज्ञान हुए यहां से जब मोह बाल टूटा तागा ॥
गंगा यमुना और सरस्वती इनके भीतर तू आजा ।
अमृत रस में न्हा कर यहां पर विश्वनाथ दर्शन पाजा ॥
योजन कोटि सुरत फिर जाकर दशों शून्य में मगनानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥३॥

द्वादश गुण प्रकाश यहां पर त्रिकुटि से शून्य में आई ।
रूपवन्त देवों से मिल कर, सिन्धु सरोवर जा न्हाई ॥
यहां शून्य की छवी को कोई, कहो सके कैसे गाई ।
मान सरोवर अमृतधारा, आनन्द की नदियाँ पाई ॥
सारंगी सितार बाजे हैं श्रुति शब्द में ठहराई ।
वसु, मरुत वहां वास करे हैं कहा कहुँ सुन्दरताई ॥
अग्नि, चन्द्र समान मुखों से मन्द मन्द ही मुस्काई ।
आयु षोड़श वर्ष सवन की ऐसी ही अवला पाई ॥
सूर्य कान्त की भूमि बनी वहां अमृत रस बरसे पानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥४॥
रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके उठे प्रेम की लहर घनी ।
बाग बगीचे अमर फलों के लालों की वहां सड़क बनी ॥
अमी सरोवर बाग-बाग में तट उनका पारस की मनी ।
कैसे शोभा कहुँ यहां की सब कुछ जाने आप धनी ॥
स्वयं प्रकाश रूप को लेकर सुरति फिर आगे को चली ।
योजन अरब गई ऊपर को आगे मिल गई प्रेम गली ॥
दसों दिशा में घोर अन्धेरा मगन भई नहीं छली बली ।
योजन खरब गई नीचे को यहां से देखी सैर भली ।
इस पद में दस नील अन्धेरा यहां से सुरति उलटानी ॥
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥५॥
योजन खरब गई नीचे को, थाह वहां की नहीं पाई ॥
धर सद्गुरु का ध्यान सुरतिया, उलट गगन पर चढ़ आई ।
महा शून्य से आगे आकर, सिताऽसिता नदियां बाई ॥
मण्डल चारि पुरुष दर देखा, भंवर गुफा झूली जाई ।

एक हिंडोला यहां पर अद्भुत झूल रहे मुनि वर राई ॥
इड़ा पिंगला रज्जु करके सुखमन की पटरी लाई ।
कुण्डली का लंगर जब खींचा, पींग गगन झोका खाई ॥
परा पश्यन्ति और मध्यमा सखियों ने वाणी गाई ।
अनहद घोर घटा बिनु बर्षे, बन्शी मधुरी मनमानी ॥
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥६॥
गोपी मधुरी वाणी गावें बन्शी बजावें नन्द कुमार ।
एक-एक गोपी संग मिल कर सोऽहं सोऽहं रहे उचार ॥
हीयरा से होयरा मिल भेटे आनन्द का को करे सुमार ।
और देव की गम नहीं यहां पर महादेव लई मन में धार ॥
गोपी बन कर मिले गले से चरणों से गल बैया डार ।
एक हो गये स्वयं रूप में नयनों से नयनों की धार ॥
गंगा यमुना अचल हो गई ऐसा अद्भुत किया विहार ।
रुद्र, साध्य, मुनि एक हो गये ताड़ी लागी अगम अपार ॥
नाका टूटा सत्य लोक का उड़ गये हंसा सेलानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥७॥
ज्योति हंस यहां बास करे हैं सूक्ष्म चैतन्य ही दर्शाया ।
जड़ स्थूल नहीं हैं यहां पर नहीं यहाँ काया माया ॥
प्रेम दिवानी हुई यहां पर सत्य-सत्य आपा पाया ।
हक्क हक्क ध्वनि सुन के बीन की फिर आपे में मगनाया ॥
रूप स्वरूपा नदियां यहां पर सोना रूपा जल छाया ।
बन उपवन हैं यहां पर अद्भुत कोटि चार इनकी छाया ॥
कोटिन सूरज चांद समाना, पहुप वृक्ष पर लगि आया ।
परम हंस यहां बास करें हैं एक भुशुण्डि काग पाया ॥

रस बस के सीकारे यहां पर हंस करें मधुरी बानी।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥८॥
सत्य पुरुष का दर्शन किया क्या वरणों सुन्दरताई।
कोटिन सूरज चांद देख लो एक रोम से शर्माई॥
पद्म त्रिलोक बराबर उनकी बिछी सेज सुख की पाई।
जाकर सोई पिया संग अपने सुध बुध अपनी बिसराई॥
सन्त कहें अब अलख लोक की महिमा और उत्तमताई।
अरबन खरबन ज्योति चमके कोटि शंख जो मलुकाई॥
अगम लोक की गम नहीं मुझ को गूँगे ने मिसरी खाई।
परमानन्द गुरु चरणों पर कोटि-कोटि ही बलि जाई॥
गुरु मिला आपा जब मेटा *श्रुति शब्द में मगनानी।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूर्ण ज्ञानी ॥९॥

भजन नं० ७

गई रजनी हुआ सवेरा उठ कर जप लो तुम ओंकार ॥टेक॥
ब्रह्म मुहूर्त में उठ गाओ, गुण ईश्वर का ध्यान लगाओ।
परमानन्द मगन हो जाओ, शोभन समय विचार।
आया दिन गया अन्धेरा ॥१॥
पूर्व दिशा अब अरुण भई है, प्रकृति देवी पट बदल रही है।
धन ने तम की बांह गही है जागे सब नरनार।
हिये में हरि को हेरा ॥ २ ॥
प्रमुदित नलिनी विहंस खिली है, प्रिय समीरसे सुरभि मिली है।
अति शोभामय बनस्थली है, अलिगण करें गुञ्जार।
लसें आम आंवरे केरा ॥३॥

इस पद में साधन तथा अनुभव के बाद श्रुति शब्द का रहस्य प्रकट किया है।

उषा देवी के दर्शन पाकर-हुए, प्रफुल्लित सभी चराचर।
तुम क्यों सोये शीश झुका कर, जागा सब संसार।
करो भारत का सुखभेरा ॥४॥

वेद धर्म का सूर्य चढ़ा है, जा में ज्ञान अनन्त भरा है।
सुनो पढ़ो हो लाभ निरा है, जिस से हो उद्धार।
सब मिट जाये मेरा तेरा ॥५॥

नव जीवन सञ्चार हुआ है, ऐक्य भाव विस्तार हुआ है।
सुखमय सब संसार हुआ है, ज्योति स्वरूप निहार।
हरि का हृदय में डेरा ॥६॥

आश्रम में चिड़िया चहचावें, पक्षी मिल हरि गीत सुनावें।
नरनारी सब तुमको ध्यावें, कर रहे जय-जय कार।
सब धन्यवाद कहें तेरा ॥७॥

भजन नं० ८

आश्रम के गाऊँ गीत, सुनो तुम नर नारी ॥ टेक ॥
है राम सरोवर तीर्थ भाई, मिट्टी खोदें लोग लुगाई।
हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सब तीर्थ के भये सहाई।
है आश्रम के बीच शोभा अति भारी ॥१॥

चहुँ ओर हैं तरुवर लागे, पीपल, अर्जुन, आम विराजें।
शीशम, कदम्ब, आंवला लागे, भोर होत ही पक्षी जागे।
मिल गावें संगीत उठे हैं ब्रह्मचारी ॥२॥

गुरुकुल बना यहां पर भाई, दूर-दूर से कन्या आई।
विद्या पढ़ती चित्त लगाई, देश उन्नति होवे सहाई।
ढवे अविद्या भीत होवेगा सुख भारी ॥३॥

दलितोद्धार पाठशाला है, एक समीप औषधालय है।
इसका काम बड़ा आला है, साथ ही एक पुस्तकालय है।
है यह सब का मीत पत्र भक्ति जारी ॥४॥

उत्तम एक गउशाला है, ठहरन को अतिथिशाला है।
भक्ति प्रेस खुला आला है, भक्तों ने देखा भाला है।
जिनकी प्रभु से प्रीत धर्म पर बलिहारी॥५॥

निष्काम कर्म सभी करते हैं, वृक्षों में पानी भरते हैं।
ध्यान प्रभु का नित धरते हैं, नहीं किसी से भी डरते हैं।
यही जो उनकी रीत वेद पढ़ें ब्रह्मचारी ॥६॥

शंकर काम करे है भारी, नारायण गौशाला सुधारी।
दिलसुख गावे भजन मुरारी, भूमानन्द कहे ब्रह्मचारी।
करो शम्भू से प्रीत हरे संकट भारी ॥७॥

भजन नं० ८

भगवद्भक्ति आश्रम का होवे सब जग में प्रचार ॥टेक॥
देश, नरेश, महेश की भक्ति, करो दूर जिससे हो कुमति।
ईश्वर दे सब को मिल सुमति, जिससे हो उद्धार—
मिट जाय सब दुःख श्रम का ॥१॥

गांवों में आश्रम बनवाओ, विद्यालय वहां पर खुलवाओ।
लड़का लड़की साथ पढ़ाओ, परदा देवो डार—
सब कर दो नाश भरम का ॥२॥

गौ, वृक्षों की नसल बढ़ाओ, इनको कटने से बचवाओ।
जो तुम भारत का सुख चाहो, करो विद्या का प्रचार—
है गा यह काम धर्म का ॥३॥

गोबर का तुम खाद बनाओ, डार खेत में रतन कमाओ।
चूल्हे में नित लकड़ी जलाओ, होंय सुखी नर नार—
है बुरा काम थापन का ॥४॥
हवादार तुम महल बनाओ, खिड़की झरोखे खूब लगाओ।
पशुओं से तुम मनुष्य बनाओ, त्रेन रहा ललकार—
अब है यह समय करम का ॥५॥

भजन नं० १०

श्रीराम चलावे काम राम रखवारा है॥ टेक॥
गर्भवास में ख्वावनहारा, उसी ने दूध कुचन में डारा।
एक उसी का लेऊ सहारा उसीसे चलता काम विश्व अधारा है॥१॥
वही राम जिन रावण मारा, सब भक्तन का कारज सारा।
उसी राम का सकलपसारा, वही मुक्तिका धाम बड़ा दातारा है॥२
महादेव विष्णु भगवाना, ऋषि-मुनि सब सन्त सुजाना।
राम नाम का करें बखाना, शास्त्र ऋग्यजु साम जिसे उच्चारा है॥३
राम रमा सब के घट माहीं, राम बिना कोई अक्षर नाहीं।
राम प्रकाशे सबके माहीं, जपलो उसका नाम-यही जग सारा है॥४
अनन्त आकाश, सूर्य, शशि, तारे, पृथ्वी, सागर पर्वत भारे।
एक उसी के रहें सहारे, बोलो सीताराम, यही एक प्यारा है॥५

भजन नं० ११

जय जय सीताराम मुख से बोलो रे॥टेक॥
बड़े भाग्य मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थन गावा।
राम भजन करो सुकरम बावा, तज दो खोटे काम—
वृथा मत डोलो रे॥१॥
राम नाम है रतन अमोला, एक रत्ती और बावन तोला।
सन्त जनों ने खूब टटोला, पूर्ण कर दे काम—

हिय विच तोलो रे ॥२॥
अष्ट प्रकार काम को त्यागो, भगवद्भक्ति में नित लागो।
सोये बहुत दिन अब तो जागो, कोड़ी लगे ना दाम—
त्यार तुम होलो रे ॥३॥
इष्ट धर्म आश्रम का राखो, मुख से झूठ कभी मत भाखो।
गांव-गांव हों आश्रम लाखों, बने देश हरि धाम—
पाप को धोलो रे ॥४॥

* भजन नं० १२

धर्म मत हारो रे ! जग में जिन्दगी दिन चार ॥टेक॥
अगम लोक से चल कर आया, पल्ले खर्ची कुछ नहीं लाया।
यहां आकर गढ़ कोट चिनाया, यों ही जाता संसार ॥१॥
धर्मराज के जाना होगा, सारा हाल सुनाना होगा।
फिर पीछे पछताना होगा, कर लो सोच विचार ॥२॥
अब तो चेत करो मेरे भाई, तूने वृथा उमर गँवाई।
तें धोके काया लुटवाई, भज राम नाम है सार ॥३॥
बार बार सद्गुरु समझावें मिनखा जन्म बहुर नहीं पावें।
गया वक्त फिर हाथ न आवे, श्री स्वामि जी कहें हरबार ॥४॥

---

* सन् १९२६ का जिकर है कि भारत में अँग्रेजी राज्य के विरुद्ध आन्दोलन चल रहा था और खिलाफत आन्दोलन के कारण हिन्दू और मुसलमानों में एकता थी। उस समय इङ्गलैण्ड के युवराज को भारत आने का निमन्त्रण दिया।

युवराज के भारत आने पर हिन्दू मुसलमान सब ने मिलकर युवराज के स्वागत का बाईकाट कर दिया। उस समय अँग्रेजी सरकार और ईसाई पादरियों ने मिलकर सरकारी रेलों द्वारा हरिजनों को एकत्रित किया और पुराने किले में पचास हजार हरिजनों की सभा कराई।

भजन नं० १२

जगत में फैला दो ब्रह्म ज्ञान ॥ टेक ॥

सत्य धर्म और वेद पढ़न में अर्पण कर दो प्राण।
सत्य ही बोलो झूठ को छोड़ो तज दो हठ अभिमान ॥१॥
नित प्रति पांचों यज्ञ रचाओ, दो दीनों को दान।
देश देश उपदेश सुनाओ, गर्जो सिंह समान ॥२॥
चीन अरब काबुल क्या लंका, क्या योरप जापान।
सन्तानों को वेद पढ़ाओ, छोड़ो मोह, अज्ञान ॥३॥

भजन नं० १३

हरि नारायण हरिनारायण नारायण हरि ओम् ॥टेक॥
भव दुःख हारण, सब सुख कारण, पतित उधारण प्रभु ओम् ॥१
शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूपा, अगम अरूपा शिव ओम् ॥२
निगम निरूपा सुर नर भूपा, ज्योति स्वरूपा प्रभु ओम् ॥३
अनन्त अपारा पार न वारा, निरधारा हरि ओम् ॥४
ब्रह्म विकाश स्वयं प्रकाश, जगन्निवास स्वामी ओम् ॥५
राम गोविन्द, परमानन्द, कृष्ण मुकुन्द गुरु ओम् ॥६

×ईसाई पादरियों ने इस अवसर से लाभ उठा कर हरिजनों को ईसाई बनाना चाहा। जब श्री महाराज जी को इसका पता चला तो महाराज जी ने यह भजन बनावाया और आश्रम की हरिजन पाठशाला की भजन मण्डली को महात्मा कृष्णानन्द जी के साथ पुराने किले में भेजा। उस भजन मण्डली का ऐसा प्रभाव पड़ा कि हरिजनों ने ईसाई बनने से इन्कार कर दिया और सभा का कार्य ही आश्रम वालों के हाथ सौंप दिया।

भजन नं० १४

तेरा यह खेल अपारा है जित देखूँ तित तू ही तू है ॥ टेक ॥
तू ही वन में, तू ही घर-मन्दिर में, कूप वावड़ी तूही सरवर में।
तू ही सब का करतार, भरम से न्यारा है ॥१॥
इन्द्रियों में देखा तू ही मन है, शुद्ध करन में तू ही पवन है।
वरुणों में तू ही वरुण, जलों में गङ्गा धारा है ॥२॥
ज्ञानी में ब्रह्म ज्ञान तू ही है, योगी का मुख ध्यान तू ही है।
सब का जीवन प्राण तू ही अधारा है ॥३॥
फूल पात फल डार तू ही है, कालों का महाकाल तू ही है।
परमानन्द प्रकाश शब्द ओंकारा है ॥५॥

भजन नं० १५

सब दुःख में करें पुकार हाय मेरी मैया री ॥ टेक ॥
गर्भवास में रक्षा कीन्हीं, जन्मत ही कुच मुख में दीन्हीं।
क्षण क्षण में सुध हमरी लीन्हीं, अवगुण सभी विसार—
पार करी नैया री ॥१॥
पूत कपूत भले हो जावे, मात कुमात कभी न कहावे।
बहुत दया हिरदे में आवे, जब कहे पुत्र ढिग जाय—
मार मोहे मैया री ॥२॥
शक्ति रूप होय सब में व्यापक, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र करि थापक।
जपें निरन्तर तुम को जापक, निर्मल ज्योति अपार—
लखे न लखैया री ॥३॥
तात गुरु भ्राता और राजा, दोष क्षमा करते सब लाजा।
क्षमा स्वरूपिणी करे सब काजा, मात करे उद्धार—
वही रखवैया री ॥४॥

भक्तों में विष्णु भक्ति हो, शिव के संग आदि शक्ति हो।
बन्धन ते देती मुक्ति हो, मन में यही विचार—
जाऊँ बलैया री ॥५॥

❀ भजन नं० १६

म्हारे प्रेम विरह के बाण लगेंगे काहू हरि जन के ॥ टेक ॥
माया बस हो रहा अज्ञानो, जिन के सद्गुरु लगे नहीं कानी ।
चुबक चुबक रह जाय हथोड़ी जैसे घन के ॥१॥
धन सम्पत्ति में फिरत भुलाया, गुरु के शब्द नहीं चित लाया ।
अन्त समय पछताय नरक में जब लटके ॥२॥
विरही की तो विरही जाने, बे दरदी नहीं पीर पिछाने ।
फटा कलेजा जाय बींध गया सब तन के ॥३॥
जो दीखे सो रूप हमारा, अलख लखे सोई लखने हारा ।
रोम रोम के बीच एक हुआ हरि चमके ॥४॥
शुद्ध सच्चिदानन्द अमाया, ओंकार अज ध्यान लगाया ।
परमानन्द प्रकाश हुआ गया जम नश के ॥५॥

:-: भजन नं० १७

लहरा रही है ज्योति चिदानन्द की ॥टेक॥
सब ब्रह्माण्डों के पृष्ठ भाग पर,
सत्ता स्फूर्ति सब को दे रही है निजानन्द की ॥१॥
सारे विश्व के बाहर भीतर, हृदय कमल में सूर्य मण्डल में ।
जगमगा रही है ज्योति महानन्द की ॥२॥

❀ तीव्र वैराग्यवान जिज्ञासु के लिये सन्त का आवाहन् ।
:-: देहावसान से कुछ काल पूर्व ब्रह्मलीन महापुरुष का व्यापक अनुभव तथा प्रकाश । ×

यह संसार असार है अन्तिम, एक ज्योति है अखण्डानन्द की ॥३
सूर्य, चाँद, विद्युत और तारे, अग्नि ज्योति है भवानन्द की ॥४
ज्योति विना कुछ और नहीं है, अहं ज्योति है ज्ञान यही है।
'अहं ब्रह्मास्मि' ज्ञानकी ज्योति, जग रही है घटघट परमानन्द की॥५

❀ षट् पदी नं० १८

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप।
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योतिस्वरूप।
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप।
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप।
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप।
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप।

❀ ब्रह्म का सृष्टि रूप में विकाश और सर्वात्म रूप से निर्देश।

उपदेश

* समुद्र जब स्थिर रहता है तब उसे ब्रह्म कहते हैं और उसी समुद्र में जब लहर उठती है तब उसी को शक्ति या माया कहते हैं, वही देश काल निमित्त स्वरूप है। सविशेष सगुण और निर्विशेष निर्गुण उसके दो रूप हैं। पहले रूप में वह ईश्वर जीव और जगत् है और दूसरे रूप में वह अज्ञात और अज्ञेय है। सर्वशक्तिमत्ता, सर्वव्यापकता एवं अनन्त-दया उसी जगत् जननी जगदम्बा प्रेमस्वरूपिणी भगवती के गुण हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पीछे अनन्त शक्ति विद्यमान है। एक कण-विन्दु कृष्ण, बुद्ध, क्रीष्ट आदि और जगत् का विस्तार एक विन्दू को प्रकाशित करता है। एक आत्मा ब्रह्म भिन्न २ सर्व उपाधियों में प्रकाशित होता है।

बड़प्पन की डींग दलबन्दी और ईर्ष्यादि सदा के लिये छोड़ दो, पृथ्वी की भांति सहिष्णु हो जाओ, लड़कपन की चञ्चलता और युवापन की गम्भीरता दोनों मिलाकर सब के साथ प्रेम से रहो। आत्मा के स्वरूप का व्यक्त और कभी अव्यक्त भाव होता है। आत्मा मानों बादलों से ढके हुए सूर्य की न्याई है। हृदय को समुद्र के समान महान् बना डालो, क्षुद्र भावों को पार कर जाओ, असंगल के आने पर भी आनन्द में उन्मत्त हो जाओ।

संसार को एक चित्र की भांति देखो जगत में कोई तुम को विचलित नहीं कर सकेगा। अहंता को दूर कर दृढ़ता से खड़े हो जाओ, काम, कांचन, मान और यश को छोड़ कर ईश्वर को दृढ़ता से पकड़ो।

---

* यहां पर ब्रह्म को समुद्र की उपमा दी गयी है।

विधि निषेध के घेरे में पड़े रहने से आत्मा का प्रसार नहीं होता। जो जितनी ही आत्मानुभूति का प्रकाश कर सकता है उसके उतने ही विधि निषेध कम हो जाते हैं।

दूसरों की सेवा शुभ कार्य है, इसी के प्रभाव से चित्त शुद्ध होता है, इसी के प्रभाव से सबके भीतर बैठे हुए अन्तर्यामी भगवान् प्रकाशित होते हैं। आदेश के अनुसार संगठन करने का उद्योग करना यही धर्म का लक्ष्य है, यही उद्देश्य है।

आदर्श धार्मिक क्षमा, धृति, शौच, शान्ति, उपासना और ध्यान में परायण आदर्श का अवलम्बन विस्तार ही जीवन और संकीर्णता ही मृत्यु है।

जहां प्रेम वहीं विस्तार, जहाँ स्वार्थता वहीं संकोच। अतएव प्रेम ही जीवन का एक आधार है। अवश्य अहैतुक प्रेम करना चाहिये, वही एक मात्र जीवन गति का नियमन करने वाला है।

जिस कर्म से जीवों के मन में धीरे धीरे ब्रह्मभाव के उदय होने में सहायता पहुँचे वही कर्म उत्तम है। यदि किसी को अधिक सुभीता देना हो तो बलवान् की अपेक्षा दुर्बल को अधिक सुभीता दो।

सदा दाता बनो, अपना सर्वस्व दे डालो, पर बदले में कुछ न चाहो। दूसरों से प्रेम करो, सहायता करो, सेवा करो, तुम से जो कुछ बने दूसरों के लिये करो पर सावधान बदले में कुछ न चाहो? व्यक्तिगत, देशगत, कालगत, कर्माकर्मका विचार कर साधन करो, सार यही है।

"परोपकाराय सतां ही जीवनम्।"

—×:o:×—

ओं तत्सत्

सदाचार

१–मनुष्य का पहला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उन की सेवा करे।

२–उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे।

३–एक ही मत-मार्ग का अनुसरण करे।

४–साधु सज्जन का सत्संग करे।

५–निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।

६–अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उनपर दृढ़ आस्था रक्खे।

७–एक परमात्मा को ही सर्वोपरि इष्टदेव मानना चाहिये। उसी की पूजा करनी चाहिये। सम्पूर्ण कर्म और जीवन का आधार समझना चाहिये। उसके पवित्र नाम का गुप्त जप करना चाहिये। और उस पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये।

८–ईश्वर जीव और माया शान्त अनादि हैं, और ब्रह्म अनन्त अनादि है ऐसा मानना चाहिये।

९–मुक्ति अनन्त और अपार है। त्रिविध दुःख की अत्यन्त निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति रूप है।

१०–कर्मों के अनुसार उन्नति और अवनति माननी चाहिये।

११–अवतार, मूर्ति पूजा, तीर्थ, श्राद्ध आदि पुरानी बातों को बुद्ध के अनुकूल हों तो मानना चाहिये।

१२–वेद शास्त्रादि प्रमाण ग्रन्थों की अच्छी बातों को बुद्धि के अनुकूल मानना चाहिये।

१३–सर्व विद्या और समस्त पुस्तकों के पढ़ने में मनुष्य मात्र का अधिकार होना चाहिये।

१४–एक मनुष्य जाति है और जैसा करता है वैसा बनता है। जन्म से कोई अच्छा बुरा नहीं होता। इसमें जात पांत ऊँच नीच का कोई भेद न होना चाहिये।

१५–अध्यात्म विद्या, गीता, उपनिषद्, कबीर आदि महात्माओं की वाणी का नित्य पाठ करना चाहिये।

१६–आलस्य छोड़कर आजन्म विद्या अध्ययन करना चाहिये।

१७–सब काम समय पर करने चाहिये।

१८–चार बार सन्ध्या करनी चाहिये।

१९–ईश्वर को और मौत को याद रखना चाहिये।

२०–भगवान् के दर्शन करनेके लिये योगाभ्यास करना चाहिये।

२१–देश, नरेश और महेश की भक्ति करनी चाहिये।

२२–सब मतों को उनकी पुस्तकों को, उनके अवतार, पीर, पैगम्बरों को और अन्य देशों के मनुष्यों को समान दृष्टि से देखना चाहिये।

२३–सब को अपना आपा समझना चाहिये और परस्पर का भेद झूठा समझना चाहिये।

२४–प्यारा हितकर सच्चा और मधुर भाषण करना चाहिये।

२५–अपने घर पर आए हुए अतिथि का यथायोग्य पूजन सत्कार

करना चाहिये।

२६–आपत्ति आने पर आनन्द में मग्न रहना चाहिये।

२७–अपने साथ में की हुई दूसरे की बुराई को और दूसरे के साथ में किये हुए अपने गुण को भूल जाना चाहिये।

२८–सम्पूर्ण कर्मों के फलोंको परमात्मा के अर्पण करना चाहिये

२९–प्रारब्ध से पुरुषार्थ को बड़ा समझना चाहिये।

३०–बलवान की अपेक्षा निर्बलों को विशेष सुविधा देनी चाहिये।

३१–मन वाणी और कर्म से सब को सुख पहुँचाना चाहिये।

३२–गौ रक्षा के लिये उत्तम नसल उत्पन्न करके दुधार बनाना चाहिये और गोचरभूमि छुड़वाना चाहिये।

३३–विषयों के आधीन न होना चाहिये।

३४–अधिक उपाधि नहीं बढ़ानी चाहिये।

३५–अधिक सन्तान न बढ़ानी चाहिये।

३६–जिसे अपने लिये चाहे उसे दूसरे के लिये करना चाहिये।

३७–हरेक काम सब की भलाई के लिये पवित्र आकांक्षा से करना चाहिये।

३८–दूसरों की बड़ाई सुन कर प्रसन्न होना चाहिये।

३९–पड़ौसी का मान व आदर अपना जैसा करना चाहिये।

४०–खान पान प्रेम और शुद्धताई के साथ मनुष्यमात्र का कर लेना चाहिये।

४१–दो बार हांडी का और एक बार चूल्हे का पका खाना चाहिये।

४२–मीठा भोजन दूसरे को खिला कर खाना चाहिये।

४३–मोटा खाना और मोटा पहरना चाहिये और बहुत भूख

लगे तब खाना चाहिये, और बहुत नींद आए तब सोना चाहिये ।

४४–सात्विक पदार्थ जो बुद्धि इत्यादि को बढ़ावे भोजन करना चाहिये ।

४५–विवाह स्वयम्बर की रीति से जात पात के विचार बिना, लड़का लड़की के प्रेम होने पर उनकी इच्छानुसार होना चाहिये ।

४६–एक पुरुष को एक ही स्त्री से विवाह करना चाहिये । आवश्यकता होने पर दूसरी से भी विवाह सम्बन्ध में जो पुरुष को अधिकार है, वही स्त्री को भी होना चाहिये ।

४७–हर विषय में स्त्री पुरुषों के समानाधिकार होने चाहिये ।

४८–स्त्रियों का आदर मान करना चाहिये उन्हें प्रणाम करना चाहिये, पैर की जूती समझने की जगह 'शिर का मुकुट समझना चाहिये । और इसके स्मरणार्थ 'गौरी शंकर सीता राम राधे श्याम, श्यामा, श्याम' इस मन्त्र का जप करना चाहिये ।

४९–स्त्री को पति व्रत धर्म और पुरुष को नारी व्रत धर्म पालन करना चाहिये । स्त्री पुरुषों को ऋतुगामी होकर उत्तम सन्तान पैदा करने का दृढ़ संकल्प होना चाहिए ।

५०–अच्छे २ लाभदायक, पूज्य उत्तम वृक्ष लगाने चाहियें । वृक्षों को, पशुओं की, मनुष्यों की, औषधियों की, उत्तम नसल बढ़ा कर प्रभूत फल देने वाले बनाने चाहिए ।

५१–तालाब, कुआ, मन्दिर, प्याऊ आदि बनाने चाहिए ।

५२–ब्याज थोड़ा लेना चाहिए । देश और धर्म के लाभ को

विचारते हुए व्यापार करना चाहिये।

५३–स्त्री, धन, गृह, वस्त्रादि से दूसरे की बहुत जरूरत को पूरा करना चाहिये।

५४–आवश्यकतायें जितनी कम हो सकें कम करना चाहिये।

५५–दस २ और पांच २ गांवों के मध्य एक २ आश्रम बनाना चाहिए और वहां ही जंगल में लड़के लड़कियों की पाठ-शाला होनी चाहिये।

५६–कभी कभी नाचना और गाना भी चाहिये।

५७–पन्द्रह, सोलह, अठारह, बीस वर्ष तक उनके आचार की, ब्रह्मचर्य की पूरी देख भाल के साथ रक्षा करनी चाहिये।

५८–वृद्ध मां बाप की और दुःखी पड़ोसी तथा मनुष्य मात्र की सेवा करनी चाहिये।

५९–मुकुटदार टोपी, टोप, पाग इत्यादि सूर्य की किरणों से आंखों की रक्षा करने वाला शिरोपा पहनना चाहिये।

६०–बालकों को खेल के द्वारा शिक्षा देनी चाहिये। उनके दिमाग पर बहुत दबाव या बोझ न डालना चाहिये।

६१–सबको बांसुरी बजानी चाहिये। सब को हर दम खुश और खुर्रम रहना चाहिये।

६२–बलवान के साथ लड़ाई नहीं करनी चाहिये।

६३–सिर पर अधिक बोझ नहीं धरना चाहिये।

६४–शरीर पर कभी बुहारी की धूल न पड़नी चाहिये।

६५–नखों से पृथ्वी न कुरेदनी चाहिये, न हाथों से तिनका ही तोड़ना चाहिये। दोनों हाथों से सिर न खुजाना चाहिये।

६६–उदय होते, अस्त होते और मध्याह्न सूर्य को न देखना

चाहिये। पानी में सूर्य का प्रतिविम्ब पड़ा हो तो उसको न देखे। इन्द्र धनुष को न देखे न दूसरे को दिखाना चाहिये।

६७–मल मूत्रादि वेगों को न रोकना चाहिये।

६८–काम क्रोधादि मन के वेगों को रोकना चाहिये।

६९–इन्द्रियों को न पीड़ित करे न उनका बहुत लाड़ ही करना चाहिये।

७०–पैर पर पैर रख कर न हिलाना चाहिये।

७१–देहरी पर बैठ कर खाना नहीं चाहिये। रात्रि को देव मन्दिर में अथवा वृक्ष के नीचे अकेले न सोना चाहिये।

७२–दिन में मलमूल उत्तर को मुख करके, रात्रि को दक्षिण को, दोनों सन्ध्याओं में उत्तर को मुंह करके और गड़बड़झाला में जिधर को चाहे उधर को मुंह करके मल मूत्र त्यागना चाहिये।

७३–जो कुछ संसार में होता है वह भावि के आधीन है ऐसी अवस्था में चिन्ता न करनी चाहिये। अडोल चित होना, शिर आई को शान्ति से सहना भगवान् के साथ प्रेम करना यही जीवन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिये।

७४–ईश्वर की उपासना जीवन और प्रकृति की उपासना मरण समझना चाहिये। विद्या जीवन अविद्या मरण, सत्य जीवन और झूठ मरण, धर्म जीवन और अधर्म मरण, परोपकार जीवन और स्वार्थ मरण, पुरुषार्थ जीवन और आलस्य मरण, ब्रह्मचर्य जीवन और व्यभिचार मरण, सादापन जीवन और सजावट मरण, एकता जीवन और विरोध

मरण, मित्रता जीवन और शत्रुता मरण, वीरता जीवन और कायरता मरण, सत्संग जीवन और कुसंग मरण, सन्तोष जीवन और लोभ मरण, अहिंसा जीवन और हिंसा मरण, कृतज्ञता जीवन और कृतघ्नता मरण समझना चाहिये। प्रत्येक मनुष्य जीवन से प्रेम रखता है और मौत से डरता है। इसलिये जीवन के साधनों में रुचि और मृत्यु के साधनों से घृणा करनी चाहिये।

७५–श्रेष्ठ मनुष्यों के साथ मित्रता करे और संसर्ग भी उन्हीं का करे। नीच मनुष्यों का संग छोड़ देना चाहिये।

७६–देव, राजा, वृद्ध, विद्वान्, वैद्य, अतिथि इनकी सेवा करे।

७७–याचकों को निराश कर खाली हाथ न जाने दे।

७८–किसी की अवज्ञा न करे। गुरु व पूज्य लोगों के पास सदा नम्रता से बैठे। पांव पसार कर बैठना आदि अयोग्य कार्य न करे।

७९–अपकार करने वाले मनुष्यों के साथ भी सदा उपकार करे। सब को अपने समान जाने और द्वेषी से दूर रहे। कोई मनुष्य हमारा वैरी है अथवा अमुक मनुष्य का मैं वैरी हूं ऐसा किसी प्रकार प्रकाशित न करे।

८०–किसी स्थान में अपना अपमान हुआ हो और अपने ऊपर स्वामी का स्नेह न हो तो इसको भी प्रकाशित न करे।

८१–पानी में अपना प्रतिबिम्ब न देखे।

८२–नग्न होकर जल में न घुसे जिसकी गहराई विदित न हो, जिस जल में मच्छादि हिंसक जीव रहते हों, उसमें भी न घुसे।

८३-बोलने के समय थोड़ा, हितकारी, सत्य प्रसंग के अनुसार मीठा बचन बोले।

८४-अधिक रस वाले घी सहित और हितकारी पदार्थों का प्रमाण अनुसार भोजन करे। रात्रि में दही न खावे, बिना नमक के कभी दही न खावे, मूंग की दाल, शहद, घी, शर्करा के बिना दही न खावे।

८५-मनुष्यों के अभिप्राय को जान कर जो मनुष्य जिस प्रकार से प्रसन्न हो, उसी प्रकार बर्ते क्योंकि अन्य मनुष्यों को प्रसन्न करना ही चतुरता है।

८६-जिस प्रकार सहाय बिना मनुष्य सुखी नहीं होता उसी प्रकार सब के ऊपर विश्वास करने वाला अथवा सब के ऊपर सन्देह रखने वाला मनुष्य भी सुखी नहीं होता।

८७-कभी उद्योग करने से खाली नहीं बैठना चाहिये। किसी के सफलीभूत उद्योग को देखकर उसपर ईर्षा न करनी चाहिये। जो पुरुष ऐश्वर्यवान् के ऐश्वर्य को देख कर दुख मानते हैं वह सदैव दुखी रहते हैं। विद्वान् को यह विचार करना चाहिये कि अमुक पुरुष को किस प्रकार यह ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है। उसी विद्या और उसी उपाय से हम भी धनोपार्जन करके अपना यश प्रकाश करें। किसी के संचित किये हुए धन की इच्छा न करे।

८८-खिड़की आदि वाले हवादार मकान बनाने चाहियें।

८९-सुखियों से मित्रता, दुखियों पर दया, साधुओं से मुदिता और दुर्जनों से उपेक्षा करनी चाहिये।

९०-ग्रह, भूत और देवताओं के वहम और पाखण्ड को नहीं मानना चाहिये।

९१-वर्षा में धूप में छत्री धारण करके चले। रात में भय के समय हाथ में लकड़ी लेकर चले। जूते पहने रहे। देह की रक्षा करे। आगे को चार हाथ पृथ्वी देख कर चले।

९२-जहां अग्नि का समूह हो वहां न जाय, सन्देहयुक्त वाहन पर न चढ़े। उन्मत्त हाथी के पास न जाय।

९३ श्रेष्ठ मनुष्यों की सभा में सम्मुख मुंह करके खांसी, श्वास, डकार, जंबाही और छींक नहीं लेवे। सभा में बैठकर कभी नाक नहीं कुरेदे।

९४-ऊकडू कभी न बैठे, अधिक देर तक घुटने ऊँचे करके नहीं बैठे।

९५-अप्रिय वस्तु को निरन्तर न देखे। हाथों से केशों को नहीं हिलावे।

९६-दो पूज्य मनुष्य अथवा स्त्री पुरुष खड़े हों तो उनके बीच में होकर नहीं जाय।

९७-शत्रु अथवा वेश्या का अन्न कभी न खाय।

९८-किसी का वृथा प्रतिभू न बने। किसी का वृथा साक्षी न हो।

९९-किसी की धरोहर न रक्खे और जहां जूवा हो तो उसको दूर से छोड़ दे।

१००-स्त्री को अलग शैय्या पर न सुलावे। पुरुषों के स्थान में स्त्री को न रक्खे और छिद्रों वाली फटी टूटी शैय्या पर शयन न करे।

१०१-किसी की निन्दा न करे।

१०२-सब ब्रह्माण्ड को अपना शरीर और उसमें सत्ता स्फूर्ति दाता परमात्मा को अपना आत्मा समझे।

१०३ सुख और भलाई परमात्मा की तरफ से दुःख और बुराई अपनी गलती से समझे।

१०४–मर के मैं परमात्मा को ही प्राप्त होऊंगा ऐसा दृढ़ निश्चय रक्खे।

१०५- जहां तक हो किसी को बुरा न समझे और न कहे।

१०६- जैसा कुछ मिल जाय उसी में सन्तुष्ट रहे।

१०७–अपने को जो सुन्दर और प्यारी वस्तु रुचे उसको परमात्मा का प्रसाद समझ कर ग्रहण करे।

१०८–सवेरे उठते ही सब को ओं ओं जय श्रीकृष्ण की कह कर सत्कार करे।

१०९–गायत्री मन्त्र से सूर्य के सामने खड़ा हो करके स्तुति प्रार्थना और उपासना करे।

११०–उपदेश और अच्छी सलाह जहां से मिले आदर के साथ स्वीकार करो।

१११–सिद्धि की दो कुञ्जियां हैं बुद्धि और आशा संयुक्त उद्योग करना।

११२–किसी बात में जल्दी न करो। जब समझ लिया तो दृढ़ संकल्प करो, करने के पूर्व उस काम की हानि लाभ भली भांति मन में तोल लो फिर उसको करो परिणाम चाहे जो हो।

११३–किसी काम में हाथ डालने के पहले अपने पुरुषार्थ को तोल लो बहुत ऊँचे चढ़ जाने से गिर जाने का डर और बहुत नीचे पड़े रहने से कुचल जाने का भय होता है।

११४–मालिक पर भरोसा करो पर ऊँट के पांव बांध कर रक्खो।

११५–किसी कठिन काम के करने में हिम्मत हार देना कायरता का लक्षण है। यदि उसे दूसरे कर सकते हैं तो तुम क्यों नहीं कर सकते परमात्मा पर दृढ़ विश्वास रख कर आदमी असम्भव काम कर सकता है। असम्भव का शब्द केवल मूर्खों के कोष में मिलता है।

११६–स्वतन्त्र और स्वाधीन वही कहा जा सकता है जो अपने काम के लिये दूसरे का आश्रित नहीं है।

११७–एक से एक मिल कर ग्यारह होते हैं। अच्छे और नीति संयुक्त कामों के लिए मिलने का नाम "नीति" और विरुद्ध कामों के लिये मिलने का नाम "गुट्ट" है।

११८–न्याय में कोमलता मिली रहने से वह सोना और सुगन्ध हो जाता है।

११९–जो कोई अपनी उन्नति या कीर्ति चाहता है तो उसको इन अवगुणों से बचना चाहिये। अधिक सोना, औंघना, डर, आलस्य और टालमटोल।

१२०–राजभक्ति का भारी दर्जा धर्मशास्त्र और नीति दोनों में है। राजा या बादशाह के द्रोही का लोक परलोक दोनों बिगड़ते हैं।

१२१–घमण्ड या अहंकार मूर्खता का चिह्न है।

१२२–जो दूसरों की निन्दा नहीं करता, जिसको अपनी प्रशंसा नहीं सुहाती दूसरे की प्रशंसा से हर्ष होता है, जो दूसरों को सुख पहुँचाता है, छोटों से कोमलता तथा दया भाव से और आदर सत्कार के साथ वर्तता है तथा खेल में भी

किसी के साथ जो चालाकी नहीं करता वह महापुरुष है।

१२३-मौलाना रूम ने फरमाया है कि मैं कितने ही जन्म भोग चुका हूं।

१२४-आधी से ज्यादा दुनियां पुनर्जन्म में विश्वास करती है।

१२५-सज्जनों के पड़ोस में रहो। भली कामनाओं को मन में बसाओ और बुरी कामनाओं को निकालो। शान्त स्वभाव रहो। जब कोई दोष लगावे तो अपने मन को न बिगाड़ो। सम्पत्ति में फूल न जाओ और विपत्ति में पिचक न जाओ। दूसरे का माल बेईमानी से मत लो। जिनसे तुम्हारा जी नहीं मिलता उनसे दूर रहो। किसी को कथनी या करनी से धोखा न दो।

१२६-पक्के धर्मी की बोली मीठी होती है। क्योंकि जो अच्छे काम की कठिनता को जानता है वह अवश्य सम्भल कर बोलेगा।

१२७-आदमी अपना दर्पण आप है। अपनी आंख आप खोलो नहीं तो कष्ट खोलेगा।

१२८-झूठी खबर न उड़ाओ। बुरे से मेल न करो। तुम्हारे शत्रु का बिचरा हुआ बैल मिले तो उसके घर पहुंचा दो परदेशी को न सताओ। जब खेत काटो तो थोड़ा सा बटोही के लिए भी छोड़ दो। अपने पड़ोसी के साथ अत्याचार न करो। मजूर की मजूरी रात भर न रक्खो। बहरे की ठठोली न उड़ाओ। अन्धे की राह में ठोकर खाने को ढेला न रक्खो। मुखबरी न करो। चुगली न खाओ। किसी को छोटी निगाह से न देखो। लग्न मुहूर्त का विचार मत करो।

१२९–बूढ़ों का खड़े होकर सत्कार और सब प्रकार प्रतिष्ठा करो। धरती को बेच न डालो।

१३०-प्रेम आकर्षण या खैंच शक्ति का नाम है जिससे यह सब रचना ठहरी हुई है और मालिक आप प्रेम स्वरूप हैं अपने से बढ़ कर मालिक को चाहता है उसको तन, मन, धन अपने प्रीतम पर वार देने में क्या शोच विचार होगा।

१३१–तीन बात जितनी बढ़ाओगे बढ़ेंगी भूख, नींद और डर।

१३२–तीन की महिमा तीन जानते हैं। जवानी की बूढ़े, आरोग्यता की रोगी और धन की निर्धन।

१३३–तीन बातों से बचो सब तुम्हें पसन्द करेंगे। किसी से कुछ न मांगो, किसी को बुरा मत कहो और किसी के मेहमान के बिना बुलाये पुछलग्गू न हो।

१३४–तीन के बिना तीन नहीं रहते। धन बिना वाणिज्य के, विद्या बिना शास्त्रार्थ के और राज्य बिना शासन के।

१३५–बूढ़ों का आदर करना, छोटों को सलाह देना, बुद्धिमानों से सलाह लेना, मूर्खों के साथ न उलझना चाहिये।

१३६–चार तरह के आदमी होते हैं- मक्खी चूस, कंजूस, उदार और दाता। जो न आप खाय न दूसरे को दे वह मक्खी चूस, आप खाय पर दूसरे को न दे वह कंजूस, आप भी खाय और दूसरों को भी दे वह उदार और जो आप न खाय परन्तु दूसरों को दे वह दाता कहलाता है। यदि दाता न बन सके तो उदार तो अवश्य ही होना चाहिये।

१३७–संकट में मित्र की, रण में शूर की, ऋण में साहू की, टोटे में स्त्री की और रोग शोक में नातेदारों की पहचान होती है।

१३८-खुशी, रंज, रोजी, मौत यह अपने आप आती हैं।

१३९ चार जाकर फिर नहीं आतेः— छूटा हुवा तीर, मुंह से निकली बात, बीती हुई उमर और टूटा हुआ दिल।

१४०-जो आके न जाय बुढापा देखा।
जो जाके न आय वह जवानी देखी॥

१४१-चार चीजें पहले निर्बल दीखती हैं और आगे जोर दिखलाती हैंः- शत्रु, आग, रोग और ऋण।

१४२-पांच के संग से बचना चाहिए, झूठा, मूर्ख, कंजूस, डरपोक और दुष्ट।

१४३-मनुष्य को चाहिये क्रोध को प्रेम से जीते, बुराई को भलाई से, लालची को उदारता से और झूठे को सत्य से।

१४४-बुढ़ापे तक स्थिर रहने वाली भलाई सुखदाई है, दृढ़ता से पकड़ा हुआ विश्वास सुखप्रद है, ज्ञानका प्राप्त करना आनन्ददायक है और पापों से बचना सुखदाई है।

१४५-जो अनहुई बात को कहता है और जो हुई से इन्कार करता है वे दोनों नरकगामी हैं।

१४६-जिसका मन संयम में है उसी में शक्ति, शान्ति, प्रेम और बुद्धि है। उस ही ने सम्पूर्ण जगत् को जीता है जिसमें पूर्ण शान्ति है।

१४७-पण्डित, चिन्ता, भय, शोक, मोह, निराशा और घृणा इन सब से दूर रहता है।

१४८-इन्द्रियों का निग्रह करना उत्तम है।

१४९-शरीर का संयम अच्छा है, वाणी का संयम उत्तम है, विचारों का संयम उत्तम है इसी तरह प्रत्येक बात में संयम

उत्तम है। जो सब बातों में संयम कर लेता है वह सब दुःखों से छूट जाता है।

१५०–जो कुछ मिल जावे उसे तुच्छ न समझो, कभी दूसरों से ईर्षा मत करो। जो औरों से ईर्षा करता है उसे शान्ति नहीं मिलेगी।

१५१–जो अपने को नाम व रूप से भिन्न समझता है वह मिथ्या पदार्थों के लिये शोक नहीं करता और वह निःसन्देह भिक्षुक है।

१५२–वह भिक्षुक जो करुणा से काम करता है वह बुद्ध सिद्धान्त के मानने में अचल है।

१५३–पांच[1] को छिन्नभिन्न कर दे, पांच[2] को छोड़ दे, पांच[3] से ऊपर होजा? ऐ भिक्षुक! जो इन पांच बेड़ियों से बच निकला है वह पार गया है।

१५४–बिना ज्ञान के ध्यान नहीं और बिना ध्यान के ज्ञान नहीं वह जिसको ज्ञान व ध्यान दोनों हैं निर्वाण के निकट है।

१५५–जिसका चित्त एकाग्र है, और जिसने संसार के प्रलोभनों को छोड़ दिया है वह शान्त कहलाता है।

१५६–जो इच्छाओं के दास हैं वे कामनाओं के प्रवाह के साथ इस तरह नीचे चले जाते हैं जिस तरह मकड़ी अपने बनाये हुये जाले के साथ। बुद्धिमान् पुरुष अन्त में इसे काट कर संसार से विरक्त हो जाते हैं।

१५३– [1]काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद। [2]पांच प्राणों को। [3]पांच कोशों से।

१५७-जो [1]सामने है उसे छोड़ दो जो [2]पीछे है उसे छोड़ दो और जो [3]मध्य में है उसे भी छोड़ दो।

१५८-जिस तरह वर्षा टूटे हुए छप्पर में घुस जाती है उसी तरह मलीन हृदय में विषय प्रवेश कर जाते हैं।

१५९-जो हमारे जीवन जगत् का दाता है, वही हमारा पिता रक्षक भी है, वह महान् तेजस्वी एवं महान् शासक है।

१६०-वही लोग मुक्त हैं जिन्होंने अपनी इच्छाओं को जीत लिया है बाकी लोग देखने में स्वतन्त्र मालूम होते हैं मगर वास्तव में वह बन्धन से जकड़े हुए हैं।

१६१-फिजूल खर्च करने वाले के पास जैसे धन नहीं ठहरता ठीक इसी तरह मांस खाने वाले के हृदय में दया नहीं रहती।

१६२-जिसे उचित अनुचित का विचार है वही वास्तव में जीवित है, पर जो योग्य अयोग्य का खयाल नहीं रखता उसकी गिनती मुर्दों में की जायगी।

१६३-किसी को अपने से प्रेम है तो उसको पाप की ओर जरा भी न झुकना चाहिये।

१६४-झूठ और निन्दा के द्वारा जीवन व्यतीत करने से तो फौरन ही मर जाना उत्तम है, क्योंकि इस तरह मर जाने से नेकी का फल मिलता है।

१६५-जो लोग अपने मित्रों के दोषों की खुल्लेआम चर्चा करते हैं, वे अपने दुश्मनों के दोषों को भला किस तरह छोड़ेंगे।

१५७- [1]भविष्य की चिंता और [2]भूतकाल की चिंता को छोड़कर [3]वर्तमान में असङ्ग होकर अपने कर्तव्य का पालन करो।

१६६–संसार में त्यागी पुरुषों से भी बढ़ कर सन्त वह है जो अपनी निन्दा करने वालों की कटु वाणी को सहन कर लेता है।

१६७–काम के समस्त वन को काट डालो, काम के वन से भय उपस्थित रहता है।

१६८–संसार को छोड़ कर तपस्वी हो जाना कठिन है, संसार को भोगना भी कठिन है, आश्रम का जीवन भी कठिन है, घर दुखदाई है, बराबर वालों के साथ रहना भी दुःखप्रद है। दुःख सहित भ्रमणशील भिक्षुक ही सब से श्रेष्ठ है।

१६९–यदि मनुष्य परदोष-दृष्टि रखता है और स्वयं सदा अपराध करने की वृत्ति रखता है तो उसके विकार बढ़ेंगे और वह मनः विकारों के दमन करने से बहुत दूर है।

१७०–महान् पुरुष जो उपकार करते हैं, उसका बदला नहीं चाहते। भला संसार जल बरसाने वाले बादलों का बदला किस तरह चुका सकता है।

१७१–योग्य पुरुष अपने हाथों से मेहनत करके जो धन जमा करते हैं, वह सब दूसरों ही के लिए होता है।

१७२–हार्दिक उपकार से बढ़ कर कोई चीज नहीं।

१७३–जब जीव तुझे जान जाता है, तब उसके लिये कोई बेगाना नहीं रहता, उसके लिये सब द्वार खुल जाते हैं।

हे प्रभो! मुझे यह वर दो कि मैं अनेकत्व के बीच में एकत्व के अनुभवानन्द से कभी वंचित न रहूं।

—:o:—

वेद में सदाचार

—×—

१. भगवान् कहते हैं—हे जीवो ! मैं सत्य स्वरूप महा-गम्भीर सत्य विद्या के प्रकट करने से जातवेदा हूं। मैं किसी दास वा आर्य से पक्षपात नहीं करता। जो मेरी आज्ञा को मानेगा, पालेगा, उस पर चलेगा मैं उसी का उद्धार करूँगा।

२. ज्ञान विज्ञान के जानने के लिये दो प्रकार की वाणी हैं सत्य और झूंठ। दोनों ही मनुष्य पर अपना प्रभाव डालती हैं। उनमें से जो सत्य है वह मनुष्य की जन्म मरण से रक्षा करती है और जो असत्य है वह मनुष्य का नाश करती है, इसलिए हठधर्मी को, किसी मजहब की कट्टरता को और पक्षपात आदि को छोड़कर सत्यवाणी को पकड़ो।

३. एक साथ चलो परस्पर संवाद करो न कि विवाद। सब के मन की रफ्तार को देखो उसके अनुसार मधुर हितकारी और प्रेम भरी वाणी से बर्ताव करो। तुम्हारे विचार द्वेष रहित हों, समानहों। तुम्हारी सभा में विरोधका अभाव हो। तुम्हारी जाति में एकता हो, सहानुभूति हो। ऊँच नीचता का अभाव हो। सब मिल कर उत्तम ज्ञान को प्राप्त करो। एक दूसरे के साथ मैत्री करो। अपने मन को उत्तम ज्ञान से शुद्ध करो। इकट्ठे कार्य करने वालों का मन साफ हो। सब मिलकर खाओ पीवो। प्रायः खाना पीना समान होना चाहिये।

४. दीर्घ आयु आयु वाले मिल बैठ खाने वाले हों। परमात्मा हमारी प्रात भाग में रक्षा करें।

५. तुम्हारे अन्दर सहृदयता मन की शुद्धता और अद्वेष को स्थापित करता हूं। तुम एक दूसरे से उसी प्रकार प्रीति पूर्वक व्यवहार करो जैसे नये उत्पन्न हुवे २ अपने बछड़े से गौ प्यार करती है।

६. पुत्र पिता का अनुव्रत हो, माता के कारण पुत्र शुद्ध मन वाला हो। पत्नि अपने पति से मधुर और शान्तिकारी वाणी बोले।

७. भाई से भाई द्वेष न करे, बहन से बहन द्वेष न करे। उत्तम और सव्रत होते हुवे तुम परस्पर कल्याणकारी वाणी से बोलो।

८. तुम्हारा अन्न का भाग समान हो। मैं तुमको एक ही धुरे में जोड़ता हूं।

९. तुम्हारे विचार समान अर्थात् द्वेष रहित हों। तुम्हारी सभा में एकता हो, तुम्हारा व्रत अर्थात् कार्य समान हो तथा तुम्हारा चित्त समान हो। जिस करके आपस में सहानुभूति संवेदना हमदर्दी, परस्पर प्रेम भाव परमेश्वर की भक्ति बढ़े वही काम करो। जो तुम अपने लिये चाहते हो वही दूसरों के लिये करो। क्योंकि सब तुम्हारे ही आत्मभूत हैं। दूसरे से बर्ताव कूप की वाणी की तरह का है। जैसा कहोगे वैसी प्रतिध्वनि होगी।

—:o:—

❀ ❀ आश्रम के उद्देश्य ❀

—:×:—

१. श्री भगवान् की भक्ति का प्रचार करना।

२. गौ रक्षा और उसके लिये गोचरभूमि छुड़वाना।

३. जंगलों में वृक्ष लगवाना और उसके बीच में जलाशय बनवाना।

४. शिक्षा का प्रचार करना जिसमें मनुष्य मात्र विद्यालाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा को फिर प्रचलित करना।

५. बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।

६. आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७. सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना।

८. राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।

❀ शारीरिक मानसिक और आत्मिक समुन्नति के एक मात्र साधन, इन उद्देश्यों के अनुसार निष्काम भाव से आचरण करने पर इस लोक तथा परलोक में मनुष्य सुख पाता है।